।। श्री गणेशाय नमः ।।

हिन्दी पाक्षिक Fort Nightly

Baat Hindustan ki

बात हिन्दुस्तान की

Baat Hindustan Ki

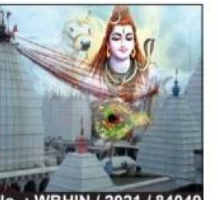

R N I No. : WBHIN / 2021 / 84049

● विक्रम संवत 2081 भाद्र कृष्ण पक्ष चतुर्दशी, 1-15 सितम्बर 2024 , 1-15 Sept. 2024, ● वर्ष 4 (Year-4), ● अंक 8 ● पृष्ठ 4 (Page-4) ● मूल्य रु. 2 (Price 2/-)

शेख हसीना को भारत में मिली रहेगी शरण या फिर प्रत्यर्पण

क्या होगा बांग्लादेश की पूर्व पीएम का भविष्य?

शेख हसीना ने 5 अगस्त को ढाका छोड़ा था और भारत आई थीं। हसीना के भारत आने के बाद उनके बारे में ज्यादा जानकारी नहीं दी गई है कि वह कहां हैं। भारत सरकार ने गोपनीयता और सुरक्षा के साथ हसीना और उनकी बहन रेहाना के रहने का इंतजाम किया है।

- बांग्लादेश की अंतरिम सरकार हसीना को शरण देने से खुश नहीं।
- भारत सरकार से हसीना को सौंपने की मांग कर चुकी है बीएनपी।
- बांग्लादेश सरकार ने हसीना का राजनयिक पासपोर्ट भी रद्द किया।

ढाका : बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री रहीं शेख हसीना तीन सप्ताह से भारत में हैं। भारत सरकार ने हसीना को सुरक्षित ठिकाना दिया है लेकिन यह स्पष्ट नहीं किया है कि इस मामले में उसका अंतिम फैसला क्या होगा। भारत सरकार ने ये साफ नहीं किया है कि हसीना के भविष्य यानी उनको शरण या प्रत्यर्पण पर उसकी सोच क्या है। भारत सरकार फिलहाल शेख हसीना के संभावित प्रत्यर्पण के बारे में अनिच्छुक नजर आ रही है। भारतीय अधिकारियों ने ये भी माना है कि हसीना की उपस्थिति ने बांग्लादेश में विकास परियोजनाओं को अस्थायी रूप से रोक दिया है। ढाका ट्रिब्यून की रिपोर्ट के मुताबिक, हसीना के प्रत्यर्पण के संबंध में अनुरोध के बारे में भारतीय अफसर टिप्पणी से परहेज कर रहे हैं। वह यह मान रहे हैं कि हसीना भारत में एक सुरक्षित स्थान पर है लेकिन उनके ठिकाने का खुलासा नहीं किया गया है। बांग्लादेश में कई दलों ने यूनुस के नेतृत्व वाली अंतरिम सरकार से हसीना के प्रत्यर्पण का अनुरोध किया है। दूसरी ओर भारतीय विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने हसीना के प्रत्यर्पण अनुरोध के सवाल पर कहा कि अभी ये मुद्दा काल्पनिक है। जायसवाल ने कहा, 'हमने पहले ही बताया है कि बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री हसीना अपनी सुरक्षा से संबंधित कारणों से बहुत कम समय के नोटिस पर भारत आई थीं। इस मामले पर हमारी कोई और टिप्पणी नहीं है।'

बांग्लादेश करेगा हसीना के प्रत्यर्पण का औपचारिक अनुरोध?

विदेशी सलाहकार एमडी तौहीद हुसैन का मानना है कि अगर हसीना के खिलाफ कानूनी मामले दर्ज किए जाते हैं तो बांग्लादेश उनके प्रत्यर्पण का अनुरोध करने पर विचार कर सकता है। दूसरी ओर यूके जुबो लीग के वरिष्ठ नेता जमाल अहमद खान ने बांग्ला ट्रिब्यून से कहा, 'मैं विश्वास के साथ कह सकता हूं कि शेख हसीना भारत या किसी अन्य देश में राजनीतिक शरण नहीं मांगेंगी।'

रिपोर्ट में ये भी कहा गया है कि बांग्लादेश सरकार ने शेख हसीना का राजनयिक पासपोर्ट रद्द कर दिया है लेकिन उनके पास एक और बांग्लादेशी पासपोर्ट है। उसका इस्तेमाल वह वीजा के लिए आवेदन करने के लिए कर सकती हैं। हालांकि इस पासपोर्ट के बारे में अधिक जानकारी का खुलासा नहीं किया गया है। वहीं यूके अवामी लीग के अध्यक्ष सुल्तान महमूद शरीफ ने ट्रिब्यून से कहा कि उनका शेख हसीन के साथ कोई संपर्क नहीं हो सका है। बीबीसी की एक रिपोर्ट के मुताबिक, भारत सरकार शेख हसीना को शरण देने और उनके प्रत्यर्पण से इतर भी विकल्प चुन सकती है। ये बांग्लादेश के पूर्व प्रधानमंत्री के लिए किसी तीसरे देश में शरण लेने की व्यवस्था करना होगा। उनको ऐसी जगह भेजा जा सकता है, जहां उनके सुरक्षित रहने की गारंटी मिले।

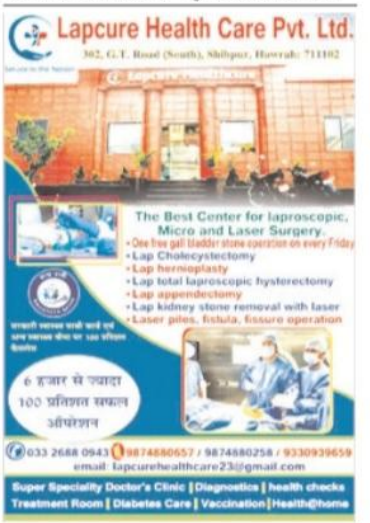

मुश्किल में तसलीमा नसरीन, भारत में रहने का परमिट हुआ खत्म

नई दिल्ली : मशहूर बांग्लादेशी लेखिका तसलीमा नसरीन भारत में रह रही हैं। लेकिन अब उनके भारत में रहने पर नया पेंच फंस गया है। दरअसल उनकी यहां रहने की अनुमति जुलाई में खत्म हो गई थी और अभी तक उसका रिन्यू नहीं हो पाया है। तसलीमा धार्मिक कट्टरपंथ की आलोचक रही हैं, ऐसे में उनको डर है कि अगर उन्हें भारत में रहने की इजाजत नहीं मिली तो उनके लिए मुश्किल हो जाएगी।

2001 से भारत में रह रही हैं नसरीन – तसलीमा नसरीन फिलहाल भारत में शरण लेकर रह रही हैं। उन्होंने भारत सरकार से यहां रहने के लिए उनका परमिट रिन्यू करने की गुहार लगाई है। उनका परमिट जुलाई में खत्म हो गया था।

बार-बार रिन्यू एप्लीकेशन चेक करती रहती हैं– एक निजी मीडिया चैनल से बात करते हुए नसरीन ने अपनी चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि मुझे भारत में रहना पसंद है, लेकिन लगभग डेढ़ महीना हो गया है और मेरे यहां रहने के परमिट का अभी तक रिन्यू नहीं हुआ है। उन्होंने आगे कहा कि उन्हें केंद्रीय गृह मंत्रालय में किससे संपर्क करना है, इसकी जानकारी नहीं है। ऑनलाइन अपने आवेदन की स्थिति की चेक करते हुए उन्होंने बताय, 'मैं किसी से बात नहीं करती। मैं ऑनलाइन अपनी एप्लीकेशन को चेक करती रहती हूं, लेकिन अभी तक कोई पुष्टि नहीं मिली है।

जब उनसे पूछा गया कि क्या बांग्लादेश में मौजूदा स्थिति उनके परमिट रिन्यू में बाधा डाल रही है, तो उन्होंने किसी भी संबंध से इनकार किया। उन्होंने कहा, 'मेरा बांग्लादेश और उसकी राजनीति से कोई लेना-देना नहीं है। मैं यहां एक स्वीडिश नागरिक के रूप में रहती हूं। और मेरा परमिट मौजूदा बांग्लादेश विवाद से पहले ही रद्द कर दिया गया था।' 2017 में भी ऐसी ही एक घटना हुई थी, जिसे उन्होंने तकनीकी समस्या बताया था।

1994 में फतवा जारी होने पर बांग्लादेश से भागी थीं–

नसरीन का निर्वासन एक लंबी और उथल-पुथल भरी यात्रा रही है। वह पहली बार 1994 में बांग्लादेश से भागी थीं जब उनके लेखन के लिए उनके खिलाफ फतवा जारी किया गया था, और यूरोप में कई साल बिताने के बाद, उन्होंने भारत में बसने का फैसला किया। 2004-2007 तक कोलकाता में रहने के बाद, कट्टरपंथियों के विरोध के चलते नसरीन को शहर से निकाल दिया गया था। उनकी किताब 'द्विखंडितो' पर बैन लगा दिया गया था और वामपंथी सरकार के दबाव में उन्हें छोड़ना राज्य पड़ा था। दिल्ली जाने से पहले वह कुछ समय के लिए जयपुर में रहीं, जहां वह 2011 से हर साल परमिट रिन्यू कराके रह रही हैं। भारत में नसरीन के भविष्य को लेकर अनिश्चितता ऐसे समय में आई है जब बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों और सैन्य समर्थित शासन के विरोधियों को हिंसा के लिए निशाना बनाया जा रहा है।

बारिश होते ही पूरे देश से कट जाता है ये गांव, कैद हो जाते हैं ग्रामीण, बीमार हुए तो जान भगवान भरोसे

भोपाल : देश आज इक्कीसवीं शताब्दी में जी रहा है. हर तरफ मॉडर्न टेक्नोलॉजी देखने को मिल रही है. साइंस ने इतनी तरक्की कर ली है कि अब होटलों में खाना सर्व करने के लिए रोबोट्स हायर किए जा रहे हैं. लेकिन तरक्की के इस दौर में भी मध्यप्रदेश में एक ऐसा गांव है, जो कई मूलभूत सुविधाओं से भी वंचित है. इस गांव में कोई अंगनबाड़ी केंद्र भी नहीं है. साथ ही जैसे ही बरसात का मौसम आता है, वैसे ही ये गांव बाहरी दुनिया से कट जाता है.

हम बात कर रहे हैं एमपी के बालाघाट में बसे नव्ही पंचायत के लोरा टोला गांव की. ये गांव घने जंगलों के बीच बसा हुआ है. साथ ही ये गांव नक्सल प्रभावित भी है. इस गांव में विशेष पिछड़ी जनजाति बैगा के लोग रहते हैं. यहां की जनसंख्या ढाई सौ के करीब है. इसमें चालीस बैगा परिवार शामिल हैं. लेकिन इन लोगों को आज भी बेसिक सुविधाओं के बगैर जीना पड़ रहा है. बात सुविधाओं की करें तो गांव के हालात ऐसे हैं कि बरसात के मौसम में ये गांव पूरी दुनिया से कट जाता है.

बेसिक सुविधाओं की कमी : ऐसा नहीं है कि इस गांव तक सरकारी योजनाएं नहीं पहुंची हैं. गांव में सड़क बनी है, बिजली की सुविधा भी है और पेयजल व्यवस्था भी की गई है. साथ ही कई ग्रामीणों को पीएम योजना आवास के तहत घर भी मिला है. लेकिन यहां कई लोग हैं जिन्हें योजना का लाभ लेने के लिए बार-बार पंचायत के चक्कर काटने पड़ रहे हैं. गांव में आंगनबाड़ी केंद्र भी नहीं हैं. इकलौता केंद्र गांव से दो किलोमीटर दूर है. ऐसे में बच्चे यहां नहीं जा पाते हैं.

बारिश में बढ़ जाती है समस्या : गांव वालों को सबसे अधिक प्रॉब्लम बारिश के मौसम में होती है. बरसात में गांव को जोड़ने वाला नाला नाला ओवरफ्लो होने लगता है. इस वजह से लोग गांव से बाहर नहीं का पाते. साथ ही अगर किसी को बीमारी हुई, तो उसका इलाज गांव के बाहर संभव नहीं हो पाता. प्राथमिक इलाज के लिए लोगों को पंद्रह किलोमीटर दूर जाना पड़ता है. सरकारी डॉक्टर्स तो लोगों के इलाज के लिए नहीं आए पाते वहीं प्राइवेट डॉक्टर्स हजार से पंद्रह सौ फीस वसूलते हैं. ग्रामीणों को सरकार से मदद की उम्मीद है ताकि बरसात में उन्हें गांव में कैद होकर ना रह जाना पड़े.

भारत की सबसे अमीर महिला राधा वेम्बु

जोहो कॉर्पोरेशन की सह-संस्थापक और सीईओ हैं चेन्नई की राधा वेम्बु

राधा वेम्बु की नेटवर्थ 47,500 करोड़, भारत की सबसे अमीर सेल्फमेड महिला

हुरुन इंडिया रिच लिस्ट में फाल्गुनी नायर, जयश्री उल्लाल और किरण मजूमदार-शॉ का भी नाम

नई दिल्ली: चेन्नई की राधा वेम्बु जोहो कॉर्पोरेशन की सह-संस्थापक और सीईओ हैं। उनकी नेटवर्थ 47,500 करोड़ रुपये की है। इस संपत्ति के साथ वह भारत की सबसे अमीर सेल्फमेड महिला अरबपति बन गई है। 30 अगस्त, 2024 को जारी 2024 हुरुन इंडिया रिच लिस्ट से इसका पता चलता है। इसमें देश के सबसे दौलतमंद व्यक्तियों को दर्शाया किया गया। राधा वेम्बु की सफलता की कहानी दृढ़ संकल्प और उद्यमिता की भावना का प्रमाण है। हुरुन इंडिया रिच लिस्ट में भारत की उद्यमशीलता की भावना का पता चलता है। इस सूची में नाइका की फाल्गुनी नायर, अरिस्ता नेटवर्क्स की जयश्री उल्लाल और बायोकॉन की किरण मजूमदार-शॉ जैसे जाने-माने नाम हैं। हालांकि, इस सूची में सबसे ऊपर राधा वेम्बु हैं। वह चेन्नई की ग्लोबल टेक्नोलॉजी कंपनी जोहो कॉर्पोरेशन की सह-संस्थापक और सीईओ हैं।

आईआईटी से की है पढ़ाई- 1972 में चेन्नई में जन्मी राधा वेम्बु की यात्रा बेहद प्रेरणादायक है। उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा चेन्नई के नेशनल हायर सेकेंडरी स्कूल से पूरी की। इसके बाद उन्होंने प्रतिष्ठित भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मद्रास से औद्योगिक प्रबंधन में डिग्री हासिल की। उनकी शैक्षणिक पृष्ठभूमि ने टेक उद्योग में उनके भविष्य के प्रयासों के लिए एक मजबूत नींव रखी।

अपने भाई श्रीधर वेम्बु के साथ मिलकर राधा वेम्बु ने जोहो कॉर्पोरेशन की स्थापना की, जो सॉफ्टवेयर सेक्टर में एक ग्लोबल शक्ति बन गई है। इसके दुनिया भर में लाखों यूजर हैं। कंपनी में राधा वेम्बु की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। वह जोहो में बहुमत हिस्सेदारी की मालकिन हैं। कंपनी के प्रमुख उत्पादों में से एक के लिए उत्पाद प्रबंधक के रूप में वह कार्यरत हैं। इसके अलावा, वह कॉर्पस फाउंडेशन की निदेशक भी हैं। वह भारत में शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा का समर्थन करने के उद्देश्य से एक परोपकारी पहल है।

राधा वेम्बु के नेतृत्व में फला-फूला कारोबार- जोहो कॉर्पोरेशन की सफलता का श्रेय उसके नए विचारों को अपनाने और ग्राहकों की संतुष्टि के प्रति प्रतिबद्धता को दिया जा सकता है। राधा वेम्बु के नेतृत्व में कंपनी ने लगातार उच्च-गुणवत्ता वाले सॉफ्टवेयर समाधान प्रदान किए हैं जो सभी आकार के व्यवसायों की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। उत्कृष्टता के प्रति इस समर्पण ने जोहो को लॉयल कस्टमर बेस दिया है। राधा वेम्बु की उपलब्धियां उनके पेशेवर जीवन से कहीं आगे तक फैली हुई हैं। उन्हें उनके परोपकारी प्रयासों, खासकर शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में जाना जाता है। कॉर्पस फाउंडेशन के माध्यम से उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार और वंचित समुदायों को स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने के उद्देश्य से विभिन्न पहलों का समर्थन किया है। समाज को वापस देने की उनकी प्रतिबद्धता अच्छाई करने और समाज को वापस देने की उनकी स्वाभाविक इच्छा को दर्शाती है।

जापान में ये कैसा वर्क कल्चर, छुट्टी ही नहीं ले रहे लोग!

टोक्यो : जापानी समाज में काम की संस्कृति को महत्व दिया जाता है। इसे ऐसे समझिए कि उन लोगों को इज्जत की नजर से देखा जाता है जो ओवरटाइम करते हैं या दफ्तर में ज्यादा समय तक रुकते हैं। सामाजिक रूप से यह भले ही अच्छा हो लेकिन शारीरिक रूप से घातक है। इससे कारोशी की समस्या होती है, जिसका जापानी में अर्थ है- अधिक काम से मौत। जापान के एक सरकारी श्वेत पत्र से पता चलता है कि देश में हर साल कम से कम 54 लोग अधिक काम की वजह से मरते हैं। पहले से ही गिरती जन्मदर से परेशान जापान के लिए यह आंकड़े चिंताजनक हैं। यही वजह है कि जापानी सरकार एक बड़े बदलाव पर जोर दे रही है, जिसमें कंपनियों और कर्मचारियों से चार दिन का कार्यसप्ताह मॉडल अपनाने को कहा जा रहा है। जापान सरकार ने 'कार्यशैली सुधार' अभियान शुरू किया है। इसके तहत कम घंटों के साथ ही कर्मचारियों के लिए ओवरटाइम सीमा और भुगतान वाली छुट्टी जैसी सहूलियत को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है। मंत्रालय ने अपनी वेबसाइट पर लिखा, 'हमारा लक्ष्य विकास और वितरण का एक अच्छा चक्र बनाना है और प्रत्येक श्रमिक को भविष्य के लिए बेहतर दृष्टिकोण रखने में सक्षम बनाना है।' जापान में छुट्टियों पर जाना बुरा माना जाता है। आमतौर पर कर्मचारियों गर्मियों की छुट्टियों या नए साल के आसपास छुट्टी लेते हैं। इस दौरान उनके साथी कर्मचारी भी छुट्टी लेते हैं। ऐसे में उनके ऊपर बेपरवाह होने का आरोप नहीं लगता है। 85 प्रतिशत कर्मचारियों का कहना है कि उन्हें दो साप्ताहिक अवकाश मिलते हैं,लेकिन ओवरटाइम घंटों को लेकर चुनौतियां बनी हुई हैं।

अब हावड़ा जिला अस्पताल में प्रवेश करना नहीं होगा आसान

हावड़ा : आरजी कर मेडिकल कॉलेज अस्पताल की घटना से सबक लेते हुए हावड़ा जिला अस्पताल के अंदर पुलिस कैंप तैयार किया जा रहा है। वहां 24 घंटे पुलिस तैनात रहेगी। इसके अलावा जूनियर डॉक्टरों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए सीसी कैमरों की संख्या भी बढ़ाई जा रही है। विशेष रूप से, अस्पताल के कर्मचारियों और डॉक्टरों के बैठने की जगह, जो अलग से चिह्नित हैं, को भी अब से सीसीटीवी निगरानी के तहत लाया जा रहा है। हालांकि हावड़ा जिला अस्पताल परिसर में असामाजिक गतिविधियों के आरोप नए नहीं हैं। पहले भी कई बार वहां से मोबाइल फोन, पैसे और अन्य सामान चोरी होने की शिकायतें आ चुकी हैं। इसके बाद भी कैरी सेल के अलावा अस्पताल परिसर में पुलिस का कोई पहरा नहीं है। लेकिन आरजी कर घटना के बाद अस्पताल अधिकारी और हावड़ा सिटी पुलिस कोई जोखिम नहीं लेना चाहते हैं। शनिवार को उप-नगरपाल (मध्य) के नेतृत्व में एक पुलिस टीम ने अस्पताल परिसर का दौरा किया। पुलिस अधिकारियों ने सुपर नारायण चट्टोपाध्याय के साथ बैठक भी की। अस्पताल के अधीक्षक ने बताया कि जूनियर डॉक्टरों की कुछ मांगें हैं। उस बारे में उनसे बात की है। उन्होंने कहा, ''अभी अस्पताल में 36 सीसी कैमरे हैं। वह संख्या बढ़ती जा रही है। विशेष रूप से चिन्हित कर्मियों व डॉक्टरों के बैठने की जगह पर कैमरे लगाने का निर्णय लिया गया है। हावड़ा सिटी पुलिस द्वारा अस्पताल परिसर में एक स्थायी पुलिस शिविर भी स्थापित किया जाएगा। वहीं अस्पताल सूत्रों के अनुसार हावड़ा जिला अस्पताल में दलाल राज कोई नहीं बात नहीं है। आपरेशन से लेकर अस्पताल में बर्थ दिलवाने तक के लिए दलाल है और यह कोई बाहरी नहीं है बल्कि अस्पताल में काम करनेवाले डी ग्रुप के साथ-साथ वहां काम करनेवाले कुछ कर्मचारी भी शामिल है। जिले के मुख्य स्वास्थ्य अधिकारी किशलोय दत्ता ने कहा, ''हावड़ा अस्पताल में स्नातकोत्तर डिप्लोमा करने वाले छात्रों के लिए पर्यवेक्षक रखे जाएंगे। इसके अलावा जिले के सभी सरकारी अस्पतालों में सुरक्षा व्यवस्था कड़ी की जा रही है।

पानी की बर्बादी रोकना उलुबेरिया नपा के लिए चुनौती

हावड़ा : सार्वजनिक स्वास्थ्य तकनीकी विभाग के अनुसार, हावड़ा जिले में जल जीवन मिशन परियोजना के तहत 53133 प्रतिशत परिवारों को पाइप पेयजल से जोड़ा गया है। यह दर राज्य के औसत से अधिक है। केंद्र सरकार ने कहा है कि राज्य में अब तक 50157 प्रतिशत घरों को सीधे पाइप से पेयजल कनेक्शन दिया जा चुका है। लोक स्वास्थ्य तकनीकी विभाग के मंत्री पुलक रॉय ने कहा, जिस तरह से काम चल रहा है, 2025 तक जिले के पंचायत क्षेत्र के हर परिवार को पाइप से पेयजल कनेक्शन उपलब्ध करा दिया जाएगा। जिले के ग्रामीण इलाकों के आधे से अधिक घरों तक पीने का पानी पहुंच गया है। अब जन स्वास्थ्य तकनीकी विभाग के सामने बड़ी चुनौती पानी की बर्बादी और पानी के अवैध भंडारण की प्रवृत्ति को रोकना है। क्योंकि, इसके परिणामस्वरूप जहां पर्यावरण को नुकसान हो रहा है, वहीं सभी क्षेत्रों में पानी समान रूप से नहीं पहुंच पा रहा है। मंत्री ने कहा, मौजूदा विधानसभा में पानी की बर्बादी रोकने के लिए कानून बनाने के लिए एक विधेयक लाया गया है। इसके अलावा अवैध जल जमाखोरी के खिलाफ सख्त प्रशासनिक कदम उठाए जा रहे हैं।

जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में कुल परिवारों की संख्या 6 लाख 75 हजार 970 है। इनमें 3 लाख 60 हजार 474 परिवारों को पेयजल कनेक्शन दिया जा चुका है। जन स्वास्थ्य तकनीकी विभाग के सूत्रों के अनुसार शेष परिवारों को पानी का कनेक्शन देने की योजना पर काम चल रहा है। इनमें दो मेगा प्रोजेक्ट भी शामिल हैं। दोनों परियोजनाएं हुगली नदी से पानी निकालेंगी, उसका उपचार करेंगी और घरों तक पहुंचाएंगी। सांकराइल परियोजना पंचला, डोमजूर, उलुबेरिया और सांकराइल के सभी हिस्सों में घर-घर पेयजल कनेक्शन प्रदान करेगी। इस प्रोजेक्ट पर करीब 715 अरब रुपये खर्च होंगे। वहीं, उलूबेरिया की कालीगर परियोजना से श्यामपुर 1, श्यामपुर 2 उलुबेरिया 1, बागनान 1 और बागनान 2 ब्लॉक को पानी की आपूर्ति की जाएगी। इस प्रोजेक्ट की लागत 1200 करोड़ आंकी गई है। प्रशासन को उम्मीद है कि ये दोनों प्रोजेक्ट 2025 तक पूरे हो जाएंगे। सरकारी अधिकारियों का यह भी दावा है कि इन दोनों परियोजनाओं के पूरा होने के बाद जिले के अधिकांश इलाकों में पीने का पानी पहुंचेगा और भूमिगत जल का उपयोग कम होगा। पुलक ने कहा, घर-घर पाइप से पेयजल पहुंचाना मुख्यमंत्री का ड्रीम प्रोजेक्ट है। उनकी देखरेख में हावड़ा समेत राज्य के अन्य जिलों में काम चल रहा है। हम निर्धारित समय सीमा के भीतर लक्ष्य पूरा कर लेंगे।

विश्व का पहला थ्री डी प्रिंटेड रॉकेट इंजिन, अग्निवाण

कोलकाता (संघमित्रा सक्सेना) : 2024 की नई भारत की इंडिपेंडेंस डे सेलिब्रेशन कुछ अलग ही हैं। क्योंकि इस बार भारत ने विश्व का पहला रॉकेट बनाया जिसमें थ्री डी प्रिंटेड इंजिन हैं। आई आई टी मद्रास ने इसका नाम ' अग्निवाण' रखा हैं। अग्निवाण की लॉन्चपेड का नाम धनुष हैं। डॉक्टर एस सोमनाथ चेयरमैन ऑफ इसरो ने, अग्निवाण के लिए अग्निकुल को ढेर सारी वधाई दी। अध्यापक भी कामकोटि डायरेक्टर ऑफ आई आई टी मद्रास ने खुशी जाहिर करते हुए कहा, स्काई इस नो मोर दी लिमिट्स फॉर आओर स्टार्टअप यानी असमान भी कम है हमारे शुरुवात के लिए। प्रोजेक्ट डायरेक्टर उमा महेश्वरी का कहना है कि यह प्रोजेक्ट लॉन्च की समय पूरा टीम मेहनत और खतरा दोनों का सामना निडरता से की। को फाउंडर एंड सी ई ओ ऑफ अग्निकुल विभाग श्रीनाथ रविचंद्रन ने इसरो को अग्निवाण के लिए धन्यवाद ज्ञापन की। फाउंडिंग एडवाइजर ऑफ अग्निकुल अध्यापक सत्यनारायण आर चक्रवर्ती ने कहा कि हमें यह बताते हुए गर्व महसूस हो रहा है कि हमने विश्व का पहला समीक्रियो थ्री डी प्रिंटेड रॉकेट इंजिन लॉन्च किया है।

पति ने पोहा बनाने से किया इनकार नाराज पत्नी ने की खुदकुशी

ग्वालियर : मध्य प्रदेश के ग्वालियर से एक चौंकाने वाला मामला सामने आया है. यहां एक पत्नी ने अपने पति से पोहा बनाने की गुजारिश की. जब पति ने पोहा बनाने से इनकार कर दिया तो पत्नी इतनी नाराज हुई कि उसने मौत को गले लगा लिया. घटना ग्वालियर के मुरार इलाके की है. दरअसल, बालकिशन जादौन की सालभर पहले कविता नाम की लड़की से शादी हुई थी. नवविवाहिता कविता ने अपने पति से पोहा खाने की इच्छा जताई और फिर उसे पोहा बनाने के लिए कहा. जब कविता के पति बालकिशन ने पोहा नहीं बनाया तो इस बात से नाराज होकर उसने आत्महत्या जैसा कदम उठा लिया. घटना की जानकारी लगने पर मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम हाउस भिजवाकर मर्ग कायम कर लिया है.

दक्षिण अफ्रीका चूहों पर बरसाएगा 'बम'

दक्षिण अफ्रीका में चूहों को खत्म करने की तैयारी की जा रही है। एक द्वीप पर चूहों ने आतंक मचा रखा है। इनकी आबादी इतनी बढ़ गई है कि यह पक्षियों के लिए खतरा बन गए हैं। इसे देखते हुए अब इन्हें मारने की तैयारी की जा रही है। इन्हें मारने के लिए अब यहां जहर लगे गोलियों की बारिश की जाएगी।

हजारों चूहों के आतंक से हुआ परेशान

केप टाउन : दक्षिण अफ्रीका में चूहों को मारने की प्लानिंग चल रही है। चूहे इतने खतरनाक हैं कि उन्हें मारने के लिए 'बमों' की बारिश की जाएगी। ये असली बम नहीं होंगे बल्कि कीटनाशक युक्त छर्रों की बारिश की जाएगी। दक्षिण अफ्रीका के एक सुदूर द्वीप पर अल्बाट्रॉस और अन्य समुद्री पक्षियों को बचाने के लिए ऐसा किया जाएगा। ये चूहे इन समुद्री पक्षियों को जिंदा खा जाते हैं। रिपोर्ट के मुताबिक चूहों का झुंड केपटाउन से लगभग 2000 किमी दक्षिण-पूर्व मैरियन द्वीप पर घोंसला बनाने वाले दुनिया के कुछ सबसे महत्वपूर्ण समुद्री पक्षियों के अंडों को खा रहे हैं। इसके अलावा अब उन्होंने जीवित पक्षियों को खाना शुरू कर दिया है।

जिन पक्षियों को इन चूहों से खतरा है उसमें वंडरिंग अल्बाट्रॉस भी शामिल है, जिसकी दुनिया में एक चौथाई आबादी हिंद महासागर के इस द्वीप पर घोंसला बनाती है। एक संरक्षणवादी मार्क एंडरसन ने पक्षी संरक्षण संगठन बर्डलाइफ साउथ अफ्रीका की मीटिंग में कहा, 'पिछले साल पहली बार चूहों को वयस्क वंडरिंग अल्बाट्रॉस को खाते हुए पाया गया है।' मीटिंग में भयानक तस्वीरें दिखाई गईं, जिसमें पक्षी खून से लथपथ थे। कुछ के सिर का मांस चबाया हुआ था। माउस-फ्री मैरियन प्रोजेक्ट ने कहा कि द्वीप पर प्रजनन करने वाले समुद्री पक्षियों की 29 प्रजातियों में से 19 के विलुप्त होने का खतरा है। एंडरसन ने कहा कि हाल के वर्षों में चूहों के हमले बढ़े हैं। लेकिन पक्षी नहीं जानते कि इसका जवाब कैसे दिया जाए, क्योंकि उनका विकास ऐसे महौल में हुआ है जहां स्थलीय शिकारी नहीं होते। न्यूज एजेंसी एएफपी की रिपोर्ट के मुताबिक उन्होंने कहा, 'चूहे बस उन पर चढ़ जाते हैं और उन्हें धीरे-धीरे तब तक खाते हैं जब तक कि वे मर नहीं जाते। एक पक्षी को मरने में कई दिन लग सकते हैं। हम चूहों के कारण हर साल हजारों पक्षियों को खो रहे हैं।'

एंडरसन माइस फ्री मैरियन प्रोजेक्ट चला रहे हैं और वह पक्षियों को बचाने के लिए इसे दुनिया का सबसे महत्वपूर्ण प्रयास बताते हैं। उनका मानना है कि इसमें 29 मिलियन डॉलर की लागत आएगी, जिसका एक चौथाई उन्होंने जुटा लिया है। बीहड़ द्वीप पर 600 टन चूहे मारने वाली दवा के छर्रे हेलीकॉप्टर से गिराए जाएंगे। वह 2027 की सर्दियों में इसके जरिए हमला करना चाहते हैं, जब चूहे सबसे ज्यादा भूखे होंगे। गर्मियों में प्रजनन करने वाले काफी हद तक पक्षी नहीं रहते हैं। हेलीकॉप्टर पायलट को भीषण ठंड में 25 किमी लंबे और 17 किमी चौड़े द्वीप के हर हिस्से तक जाना होगा। एंडरसन का कहना है कि हमें हर एक आखिरी चूहे से छुटकारा पाना होगा। एक भी अगर बच गए तो वह फिर आबादी बढ़ा सकते हैं।

'जिंदगी और समय' विश्व के दो सबसे बड़े टीचर हैं, डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम

नई दिल्ली : भारत की आन-मान-शान और युवाओं के प्रेरणा स्रोत डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम दुनिया से अलविदा तो कह गए लेकिन हर भारतवासी के दिल में अपना स्थान बना गए। उन्होंने जिंदगी को जीने का असली मकसद बताया। संघर्ष और सफलता के बीच की खाई को पाटना सिखाया। देशभक्ति का मिशाल 'द मिशाइल मैन ऑफ इंडिया' के नाम से प्रख्यात डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम की पुण्यतिथि पर शत शत नमन।

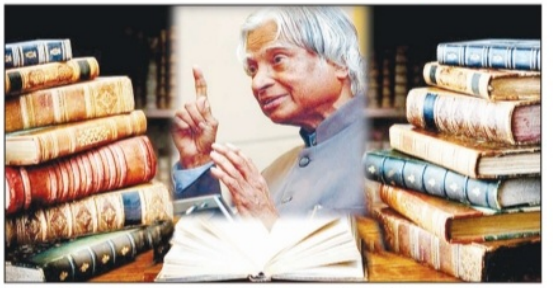

निस्वार्थ सेवा करने वाल महान वैज्ञानिक कलाम ने देश के लिए अपना जीवन समर्पित किया। कलाम का जन्म तमिलनाडू के रामेश्वरम में 15 अक्तूबर 1931 में एक गरीब परिवार में हुआ। गरीबी क्या नहीं करवाती है इससे तो हम भलीभांति परिचित हैं, घर में खाने का संकट और कलाम के अंदर बड़े सपने जगह ले रहे थे। कठिन परिस्थितियों में अपनी शिक्षा पूरी की, जिस संकल्प से आगे भविष्य को देखना चाहते थे वो समय भी उनके पास आया। हिम्मत से कठिन मुकाम भी मिल जाते हैं। मिसाइल मैन के नाम से विख्यात डा. कलाम भारतीय इतिहास में एकमात्र ऐसे राष्ट्रपति रहे हैं, जो वैज्ञानिक थे। सादगी, मितव्ययिता और ईमानदारी जैसे विलक्षण गुणों की बदौलत डा. कलाम ने समस्त देशवासियों को दिल जीत लिया था। मौजूदा राजनीतिक परिवेश में ऐसे गुणों वाले व्यक्ति का मिलना दुर्लभ है। यही कारण है कि करोड़ों लोग आज भी उन्हें अपना प्रेरणास्रोत मानते हुए उनकी कही बातों का अनुसरण करते हैं। उनकी सबसे बड़ी विशेषता यही थी कि उन्होंने जिस भी व्यक्ति के साथ काम किया, उसी के दिल को जीत लिया। वह कहते थे कि आसमान की ओर देखें, हम अकेले नहीं हैं, पूरा ब्रह्माण्ड हमारा मित्र है और जो सपना देखते हुए मेहनत कर रहे हैं, उन्हें बेहतरीन फल देने का प्रयास कर रहा है। सपना सच हो, इसके लिए जरूरी है कि आप सपना देखें। सपने सच में बदलने के लिए मेहनत तो करनी पड़ेगी, एक दिशा सही दिशा पकड़ना जरूरी है। जीवन में सकारात्मकता का सबसे बड़ा योगदान होता है।

कलाम की जिंदगी में कई कठिनाई आई लेकिन उन्होंने कभी हिम्मत नहीं हारी, समय का चक्र बदलता है तो वहीं कलाम के जीवन में हुआ। सही मेहनत और दृढ़ संकल्प देश के लिए बड़ा योगदान देने की हठ ने कलाम को बड़ा मुकाम दिया। उन्होंने देश में ऐसा काम किया जो सदियों तक प्रेरणा प्रदान करता रहेगा।

अपने जीवनकाल में उन्होंने विंग्स ऑफ फायर, इग्नाइटेड माइंड, इंडिया 2020: ए विजन फॉर न्यू मिलेनियम इत्यादि 30 से भी ज्यादा पुस्तकें लिखी। 1999 से 2001 के बीच वे भारत सरकार के प्रमुख वैज्ञानिक सलाहकार रहे तथा 2002 से 2007 तक भारत के 11वें राष्ट्रपति रहे। राष्ट्रपति बनने के बाद जब वे राष्ट्रपति भवन पहुंचे थे तो उनके साथ सामान के रूप में केवल दो सूटकेस थे, जिनमें से एक में उनके कपड़े तथा दूसरे में उनकी प्रिय पुस्तकें थी।

महान वैज्ञानिक एपीजे अब्दुल कलाम का जीवन बेहद गौरवशाली रहा है, राष्ट्रपति बनने के बाद उसके पहले उनका एक ही लक्ष्य रहता था कि समय का सदपयोग करना, समय निकलने के बाद वापस कभी नहीं आता है। राजनीति में नेता अधिकांश अवकाश के लिए उतावले रहते हैं, अवकाश मिले तो दूसरे देशों की सैर करने जाऊं, लेकिन कलाम ने कभी अवकाश नहीं लिया। न धन से मोह न दुनिया से ममता, उनका लक्ष्य भारत एक परिवार है उनका व्यक्तिगत कोई परिवार नहीं अपितु देश का हर परिवार ही उनका परिवार है। देश की कातिर अपना जीवन समर्पित किया। अमेरिका ने नासा के लिए बड़े से बड़ा ऑफर दिया लेकिन कलाम ने देश की संप्रभुता को विशेष माना और अपने देश की प्रतिबद्धताओं को जीवन में महत्वपूर्ण स्थान दिया। बता दें कि उन्होंने अपने कार्यकाल के दौरान दो ही अवकाश लिए जिनमें एक अपनी मां के देहांत पर और दूसरा अपने पिता के देहांत पर। ऐसे महान विभूती को पूरा देश नमन करता है।

27 जुलाई 2015 को यह महान विभूति भारतीय प्रबंधन संस्थान शिलांग में एक कार्यक्रम के दौरान छात्रों को सम्बोधित करते हुए अचानक दिल का दौरा पड़ने पर सदा के लिए चिरनिद्रा में लीन हो गई। कलाम साहब ने देश के सर्वोच्च पद पर रहते हुए अपने कार्यकाल में सादगी, मितव्ययिता और ईमानदारी की जो मिसाल पेश की, वह आज और कहीं देखने को नहीं मिलती। ऐसा ही एक वाकया स्मरण आता है, जब एक बार उनका पूरा परिवार उनसे मिलने दिल्ली आया। स्टेशन से सभी को राष्ट्रपति भवन लाया गया, जहां सभी आठ दिनों तक ठहरे।

उन पर खर्च हुई एक-एक पाई कलाम साहब ने अपनी जेब से खर्च की। उन्होंने कभी सरकारी पैसे का उपयोग अपने जीवन के लिए नहीं किया। उनकी सादगी, ईमानदारी और कर्मठता भारत के हर नागरिक के लिए प्रेरणा है। कभी कलाम साहब ने किसी उपहार को अपने पास रखा, कहीं पर सम्मान में मिला उपहार राष्ट्रपति भवन में सौप दिया गया। दअसल टेक्नोलॉजी इन्फॉर्मेशन, फोरकास्टिंग एंड एसेसमेंट काउंसिल नामक एक सरकारी संगठन देश की प्रगति से जुड़ा विजन डॉक्यूमेंट तैयार करता है और 1996 में कलाम साहब इसके अध्यक्ष थे। उन्हीं की अध्यक्षता में 1996-97 में विजन 2020 डॉक्यूमेंट तैयार किया गया। उस रिपोर्ट में सरकार को कुछ सुझाव देते हुए बताया गया था कि 2020 तक भारत को क्या कुछ हासिल करने का लक्ष्य रखना चाहिए। डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम देश के बच्चों के भविष्य को लेकर काफी चिंतित रहते थे, उन्होंने एक जगह अपने संबोधन में कहा कि देश में करीब 2 से 3 करोड़ बच्चों का जन्म प्रतिवर्ष होता है, इन बच्चों के भविष्य को सुनहरा बनाने के लिए सरकार को कठिन कदम उठाने की जरूरत है, शिक्षा में बदलाव के सात सुविधाजनक शिक्षा की बहाली करना है। भारत को भ्रष्टाचार से बचाकर एक शिक्षित देश बनाने के संकल्प से आगे बढ़ना होगा। यह संभव तब हो पाएगा जब माता-पिता और गुरु का योगदान बराबर होगा। निस्वार्थ शिक्षा गुरु के द्वारा मिलना शुरु हो जाए गरीब बच्चों को निशुल्क अच्छी शिक्षा मिलना प्रारंभ हो जाए तो देश में शिक्षा का माहौल बेहतर हो जाएगा। उनका कहना था कि जो लोग अपने दिल से कार्य नहीं करते, वे जिंदगी में भले ही कुछ भी हासिल कर लें लेकिन वह खोखला होता है, जो उनके दिल में कड़वाहट भरता है। कलाम साहब के अनुसार जिंदगी कठिन है और आप तभी जीत सकते हैं, जब आप मनुष्य होने के अपने जन्मसिद्ध अधिकार के प्रति सजग हों। किसी व्यक्ति के जीवन में कठिनाई नहीं होगी तो उसे सफलता की खुशी का अहसास ही नहीं होगा।

ट्रेन के 3 घंटे से ज्यादा लेट होने पर पा सकते हैं रिफंड

भारतीय रेल एशिया का सबसे बड़ा रेल नेटवर्क है, जिसमें पिछले साल लगभग 648 करोड़ लोगों ने यात्रा की है। वैलिड ट्रेन टिकट वाले यात्री को उपभोक्ता संरक्षण कानून 2019 के अनुसार उपभोक्ता मानते हुए उन्हें अनेक कानूनी अधिकार मिले हैं।

टिकट और रिजर्वेशन : अगर ट्रेन नियत समय से 3 घंटे से ज्यादा लेट हो और यात्रा कैंसिल करनी पड़े तो टीडीआर फाइल करके टिकट का पूरा रिफंड क्लेम किया जा सकता है। अगर यात्रा शुरू करने के बाद ट्रेन ज्यादा लेट हो जाए, ट्रेन रद्द होने की सूचना यात्री को नहीं मिले, ट्रेन डायवर्ट होने पर कनेक्टिंग ट्रेन नहीं मिले तो इस पर भी हजनि की मांग की जा सकती है। कन्फर्म रिजर्वेशन होने के बाद किसी और को सीट अलॉट होने को भी सेवा में कमी मानते हुए उपभोक्ता अदालतों ने हर्जाना देने के कई आदेश दिए हैं।

खान-पान और एसी : रेलवे में अनाधिकृत वेंडर्स को सुरक्षा से खिलवाड़ के साथ सेवा में कमी माना गया है। गंदी बेडशीट, कम्बल या गंदे टॉयलेट की शिकायत 138 नम्बर पर की जा सकती है। सफर के दौरान पंखा या एसी नहीं चलने को सेवा में कमी मानते हुए उपभोक्ता अदालत ने 1991 में रेलवे को हर्जाना देने का आदेश दिया था। खाने में गंदगी और कीड़ा मिलने और साँफ्ट ड्रिंक को एमआरपी से ज्यादा दाम पर बेचने जैसे मामलों को शारीरिक और मानसिक यंत्रणा मानते हुए उपभोक्ता अदालतों ने रेलवे को हजनि देने के आदेश दिए हैं।

यात्री सुरक्षा और चोरी : सुप्रीम कोर्ट ने 2004 के फैसले में रेलवे अधिनियम 1989 की धारा-124-ए के तहत रेलवे प्रशासन को चोरी की घटनाओं के लिए जिम्मेदार माना था। कम्पार्टमेंट में अनाधिकृत व्यक्तियों के प्रवेश और उसकी वजह से असुरक्षा और चोरी को छत्तीसगढ़ राज्य उपभोक्ता आयोग ने रेलवे विभाग की सेवा में कमी माना था। लेकिन महाराष्ट्र राज्य उपभोक्ता आयोग ने रेलवे अधिनियम की धारा-100 के तहत ऐसे मामलों में रेलवे को जिम्मेदार नहीं माना है। सुप्रीम कोर्ट ने एक फैसले में कहा कि यात्रियों को अपने सामान की सुरक्षा की जिम्मेदारी खुद लेनी चाहिए। एक अन्य फैसले के अनुसार चोरी की जवाबदेही और हर्जाना क्लेम करने के लिए रेलवे प्रशासन की लापरवाही या मिसकंडक्ट प्रूफ करना जरूरी है। दुर्घटना में घायल यात्रियों और मृत यात्री के परिजनों को रेलवे से हर्जाना मिलता है। घायल यात्रियों को अस्पताल में भर्ती होने पर मेडिकल खर्च के लिए भी प्रावधान हैं।

शिकायत और हर्जाने की ऐसी है पूरी प्रक्रिया : कानून की धारा-2 (11) में सेवा में कमी मानते हुए धारा-2(6)(3) के अनुसार जिला उपभोक्ता आयोग में शिकायत दर्ज कराई जा सकती है। धारा-34 में क्षेत्राधिकार निर्धारित है। इसके अनुसार जहां पर वारदात हुई हो या जहां शिकायतकर्ता रहता हो, वहां की उपभोक्ता अदालत में ऑनलाइन तरीके से शिकायत दर्ज कराई जा सकती है। 5 लाख रुपए तक के मामलों में किसी तरह की कोर्ट फीस का भुगतान नहीं करना पड़ता। वकीलों के बगैर शिकायतकर्ता खुद ही आयोग के सामने बहस कर सकता है। शिकायतों के समयबद्ध निस्तारण के लिए कानून में प्रावधान हैं। जिला आयोग से राहत नहीं मिलने पर राज्य आयोग और फिर राष्ट्रीय आयोग में अपील की जा सकती है।

सातवें आसमान पर शरवरी वाघ

कई सफल फिल्मों में प्रतिभाशाली क्षमता का प्रदर्शन कर चुकी शरवरी वाघ ने खुद को फिल्म इंडस्ट्री की एक प्रमुख अभिनेत्री के रूप में स्थापित करने में सफलता पा ली है। यह वर्ष शरवरी के लिए बहुत नच्छा रहा है। पहले उसने हॉरर कॉमेडी फिल्म 'मुंज्या' में अपने अभिनय से सभी का ध्यान आकर्षित किया और उसके बाद फिल्म 'महाराज' में भी उसने एक विशेष भूमिका निभाई और इन दिनों वह फिल्म 'वेदा' को लेकर खूब चर्चा बटोर रही है।

इतना ही नहीं, वह इंटरनैशनल मूवी डाटा बेस यानी आई.एम.डी.बी. की लोकप्रिय भारतीय हस्तियों की सूची में भी लगातार पहला स्थान प्राप्त कर रही है। खास बात है कि उसने इस स्थान के लिए दीपिका पादुकोण को पीछे छोड़ दिया है।

उसका कहना है कि फिल्म इंडस्ट्री में किसी भी कनैक्शन के बिना यह स्थान पाना एक बड़ी उपलब्धि है। उसने कहा, 'मैं शब्दों में बयां नहीं कर सकती कि यह साल मेरे लिए कितना अच्छा रहा। मैं 'मुंज्या' के लिए मिलने वाले प्यार के लिए आभारी हूं, जो 100 करोड़ क्लब में प्रवेश कर गई और 'महाराज' तथा 'वेदा' में अपनी विशेष भूमिकाओं के लिए मिली तारीफ के लिए भी शुक्रगुजार हूं।' उसने कहा, 'मैं आगे बहुत मेहनत करने जा रही हूं क्योंकि मैं सर्वश्रेष्ठ फिल्मों का हिस्सा बनना चाहती हूं और उम्मीद है कि मैं अपने देश की सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्रियों में से एक बनूंगी। मेरा मन उस लक्ष्य पर लगा हुआ है। आई.एम. डी. बी. की लोकप्रिय भारतीय हस्तियों की सूची में नंबर एक स्थान पर पहुंचना वास्तव में एक सम्मान है, जिसे मैं हमेशा दिल में संजो कर रखूंगी। हर संतुष्टि मेरे लिए खुद को और आगे बढ़ाने की प्रेरणा है।

सनी कौशल से साथ जुड़ा नाम विक्की कौशल के छोटे भाई सनी कौशल का बीते काफी वक्त से शरवरी के साथ नाम जोड़ा जा रहा है लेकिन गत दिनों अपने रिलेशनशिप स्टेटस पर बात करते हुए सनी ने कहा कि वह सिंगल है तथा शरवरी तो सिर्फ उसकी अच्छी दोस्त है। वहीं जब शरवरी से एक इंटरव्यू में पूछा गया कि क्या यह सनी को डेट कर रही है, तो उसने कहा, 'यह झूठ है, मैं तो अफवाहों पर यकीन नहीं करती, आशा है कि मेरे दर्शक और फैन्स भी न करें।'भले ही शरवरी और सनी ने अभी तक अपना रिलेशन कंफर्म न किया हो, पर दोनों अक्सर साथ नजर आते हैं। रणवीर सिंह भी चैट शो 'कॉफी विद करण' में इसकी पुष्टि कर चुका है। जब उससे पूछा गया कि कैटरीना और विक्की किसके साथ 'डबल डेट' पर जाना पसंद करेंगे, तो जवाब में रणवीर ने तुरंत सनी और शरवरी का नाम लिया था।

हाल ही में शरवरी से जब एक पॉडकास्ट में कहा गया कि कुछ लोगों का मानना है कि वह अगली आलिया भट्ट' हो सकती है, तो शरवरी ने कहा कि आलिया निश्चित रूप से उसके लिए एका प्रेरणा है लेकिन वह दूसरों के लिए अपने दम पर एक उदाहरण बनना चाहती है। उसने कहा कि आलिया एक सच्ची सुपरस्टार है लेकिन यह शरवरी के रूप में ही पहचान बनाना चाहती है और उम्मीद है कि एक दिन लोग उसका नाम एक उदाहरण के रूप में लेंगे, ठीक वैसे हो, जैसे वे आज आलिया का लेते हैं। शरवरी ने कहा कि जब से उसकी एक अभिनेत्री बनने की ख्वाहिश शुरू हुई थी, उसका लक्ष्य स्क्रीन पर विभिन प्रकार के किरदार निभाना रहा है, जिसका उद्देश्य अपने अभिनय से दर्शकों को चकित करना है। उसने उल्लेख किया कि वह इसे एक प्रशंसा के रूप में देखती है, जब लोग टिप्पणी करते हैं कि वे उसे नहीं बल्कि स्क्रीन पर उसके द्वारा निभाए गए किरदार को पहचानते हैं।

स्वत्वाधिकारी **'बात हिन्दुस्तान की'** (पाक्षिक) पत्रिका के लिए मुद्रक व प्रकाशक श्रीमती सोनी कुमारी झा, 23 रामकुमार गांगुली लेन, 2रा तल्ला कमरा नं. 203, पोस्ट- बी. गार्डेन, शिबपुर, हावड़ा-711103 (प. बंगाल) फोन न.: 8902221434 से प्रकाशित एवं चपला मुद्रण, 2/3/1, रामजी हजरा लेन, हावड़ा-711101 से मुद्रित, सम्पादक-**उमेश तिवारी**, फोन- 8420899919 पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी, ईमेल/वेबसाईट-www.baathindustanki@gmail.com
(Owner, Printer & Publisher of 'Baat Hindustan Ki' : Smt. Soni kumari Jha, 23, Ramkumar Ganguly Lane, 2nd floor, room no-203, PO : B.Garden, Shibpur, Howrah-711103, Mo. 9798848926 & Printed from CHAPLA MUDRAN 2/3/1 Ramji Hazra Lane, Shibpur, Howrah-711101, Editor : **Umesh Tiwari** Mo. 8420899919, Email/Website : www.baathindustanki@gmail.com)